ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

पर्यावरणविद् लोकचेता : गुरु जाम्भोजी

KEY WORDS:

Pushpa Vishnoi Govt. Girls College Piparcity, Jodhpur

ABSTRACT

गुरु जाम्भोजी की जितनी महत्ता अध्यात्म एवं सामाजिक चेतना के संबंध में है, उससे कहीं अधिक पर्यावरण चेतना के संबंध में है। गुरु जाम्भोजी के सामाजिक चिन्तन की परिधि अत्यंत व्यापक रही है। उन्होंने सामान्य जन में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागृति के साथ आर्थिक व पर्यावरण चेतना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। मध्यकालीन विषम परिस्थितियों से जूझ रहे नितान्त सरल एवं भोले–भाले लोगों के बहुमुखी विकास हेतु, उन्होंने अपना समस्त जीवन लगा दिया। उनका उद्देश्य जन–सामान्य में संपूर्ण एवं दीर्घकालीन परिवर्तन लाना था तथा इस हेतु व्यक्ति के प्रत्येक पहलू व लोक चेतना के व्यापक आयाम तक स्पर्श करना आवश्यक था। गुरु जाम्भोजी ने पर्यावरण संरक्षण को धर्म से जोड़कर और अधिक सशक्त एवं लोकग्राह्य बना दिया। गुरु जाम्भोजी ने व्यक्ति को समाज तथा उसकी संस्कृति के विषय में सुप्त भावों को जगाकर संस्कारों की महत्ता से परिचित करवाया। लोक संस्कृति का परिष्कार कर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन का महनीय कार्य किया। अकाल–अभावों में जी रहे लोक को प्रकृति, पर्यावरण व जैव विविधता के संरक्षण का दूरगामी पाठ पढ़ाकर मानव जाति की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण को बहुत महत्त्व दिया गया है। यहाँ मानव जीवन को हमेशा मूर्त या अमूर्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि के साहचर्य में ही देखा गया है। पर्यावरण शब्द का अर्थ है– हमारे चारों ओर का आवरण। संरक्षण का तात्पर्य है– हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें। पर्यावरण का तथ्यतः अर्थ मात्र किसी व्यक्ति से, उसके परिवेश न होकर, समाज के राष्ट्र के और इस वसुधा, जिस पर हम वास करते हैं, जीवनयापन करते है तथा जो अपनी समग्रता में, व्यक्ति समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्रों को प्रभावित करने में सक्षम है, से है। दूसरे शब्दों में पर्यावरण की व्यापकता, पेड़–पौधों, जीव–जन्तुओं नद–नदियों, उत्तुंगगिरी शिखरों–पहाडों या मात्र किसी तन्त्र विशेष तक न होकर, उस सम्पूर्ण तथ्य परक वास्तविकता से है, जिस पर हमारा समस्त आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास आश्रित है।[1]

प्रकृति के प्रति लगाव, अनुराग तथा उसके संरक्षण में भारतीय संस्कृति का अनूठा योगदान रहा है। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की महिमा का जितना वर्णन मिलता है, वह अन्य देशों की संस्कृति में नहीं मिलता है। भारतीय संस्कति में वृक्ष मानव के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रमुख घटक के रूप में माने जाते है। वनस्पति सदियों से भारतीय चिकित्सा–पद्धति आयुर्वेद का आधार रही है। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की देन के कारण इन्हें देव समान पूजनीय माना गया है। वेदों में वृक्षों को पृथ्वी की संतति कहकर इन्हें अत्यधिक महत्त्व एवं आदर प्रदान किया गया है। लेकिन ज्यों–ज्यों मानव सभ्यता का विकास हुआ, वह प्रकृति से दूर होने लगा। मनुष्य बस्ती, गाँव एवं शहरों का निर्माण कर उनमें निवास करने लगा। धीरे–धीरे मनुष्य पर्यावरण की उपेक्षा करने लगा। वृक्षों को अपने उपयोग हेतु काम लेता रहा परन्तु नवीन वृक्षों को नहीं लगाया। मनुष्य प्रकृति का शोषण करने लगा। मध्यकाल में सं. 1508 में मरूधरा में एक महापुरुष का अवतरण हुआ जिनका नाम था– गुरु जाम्भोजी।[2] उन्होने मरूस्थल को रोकने, अकाल का समाधान करने तथा प्राणी मात्र के जीवन को सुरक्षित रखने हेतु आज से करीब 525 वर्ष पूर्व विश्नोई पंथ[3] की स्थापना की तथा जन–जन में पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाई। विश्नोई पंथ के प्रणेता गुरु जाम्भोजी मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संत थे, वे संत होने के साथ–साथ महान् चिन्तक दूर–दृष्टा तथा विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् लोक चेता महापुरुष थे।

गुरु जाम्भोजी की जितनी महत्ता अध्यात्म एवं सामाजिक चेतना के संबंध में है, उससे कहीं अधिक पर्यावरण चेतना के संबंध में है। गुरु जाम्भोजी के सामाजिक चिन्तन की परिधि अत्यंत व्यापक रही है। उन्होंने सामान्य जन में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक जागृति के साथ आर्थिक व पर्यावरण चेतना का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। मध्यकालीन विषम परिस्थितियों से जूझ रहे नितान्त सरल एवं भोले–भाले लोगों के बहुमुखी विकास हेतु, उन्होंने अपना समस्त जीवन लगा दिया। उनका उद्देश्य जन–सामान्य में संपूर्ण एवं दीर्घकालीन परिवर्तन लाना था तथा इस हेतु व्यक्ति के प्रत्येक पहलू व लोक चेतना के व्यापक आयाम तक स्पर्श करना आवश्यक था। तत्समय में भी आज की भाँति प्रकृति के प्रति मानवीय अनुदारता चरम पर थी। गुरु जाम्भोजी ने अपनी दूरदर्शिता की क्षमता का परिचय देते हुए प्रकृति, प्राणी तथा पर्यावरण की महत्ता से जनता को परिचित कराया। पर्यावरण का संबंध धर्म से जोड़कर उसे बल प्रदान किया।

उन्होंने मरूस्थल के लोगों की दीन–हीन अवस्था से साक्षात्कार किया था। उन्होंने लोक को अभावों एवं अकालों से जूझते हुआ देखा। मरूस्थल में निरन्तर अकाल का प्रमुख कारण वनस्पति का नहीं होना था। अधिकांश लोगों की आजीविका का आधार पशुपालन एवं कृषि ही था। लेकिन मरूवासी अपनी अज्ञानता के कारण अपनी आवश्यकता एवं सुरक्षा को नहीं समझपा रहा था तथा निरन्तर आत्मघाती कार्यों में रत था। प्राकृतिक अनुदारता से ग्रस्त इस धरती को वह अपनी जरूरत हेतु और अधिक उजाड़, नग्न एवं वीरान बना रहा था। उसका यह नंगापन अकाल व महामारी के समय विवशता व लाचारी से घुलकर इतना विकृत रूप धारण कर लेता था कि वह इस प्राणदायक प्रकृति के प्राण लेने को उतारू हो जाता था। उसका यह मनोवेग वातावरणीय संतुलन एवं उस पर आधारित संस्कृति का शत्रु था। अपने जीवन एवं पशुधन को बचाने के लिए वह सूखी धरती की सूखी टहनी को भी नहीं छोड़ता था। प्राकृतिक अनुदारता के साथ–साथ मनुष्यकृत कुकर्मों ने मरुस्थलीय जीवन को संकट में डाल दिया था।[4] लेकिन वह ऐसा अज्ञानतावश कर रहा था। मरुस्थल में निरन्तर अकाल का प्रमुख कारण वनस्पति का नहीं होना था। लेकिन लोक–मानस इस तथ्य से अनभिज्ञ था। जबकि अधिकांश लोगों की अर्थव्यवस्था का आधार पशुपालन एवं कृषि ही था। प्राकृतिक असंतुलन के कारण वर्षा के अभाव में व्यक्ति को पशु सम्पदा एवं खेती से वंचित होना पड़ रहा था।

गुरु जाम्भोजी ने लोक की इन विषमताओं को उजागर कर उनकी अभिव्यक्ति तक ही सीमित नहीं रहे अपितु इसके निराकरण का सटीक मार्ग भी निकाला। मध्यकाल की इस भोली–भाली, अशिक्षित जनता में चेतना के संचार का क्रांतिकारी कार्य गुरु जाम्भोजी ने किया। अकाल की स्थिति में यहाँ के लोग अपने जीवन तथा पशुओं की रक्षा हेतु इस सूखी रसा के ढूंठ पेड़ों को भी नहीं छोड़ता था। तब जाम्भोजी ने ऐसे लोगों को अपना गुरुत्व प्रदान करते हुए पेड़ों एवं प्रकृति की रक्षा तथा प्राणी मात्र की सुरक्षा का संदेश दिया। उन्होनें 29 नियमों की आचार–संहिता में दो नियम प्राकृतिक संतुलन हेतु दिए, **'जीव दया पाळणी अर रूंख ळीलो नहीं घावै।'**[5] यद्यपि उनके समय पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन परत में छिद्र तथा ग्लोबल वार्मिंग जैसी कोई समस्या नहीं थी, फिर भी अकाल एवं अभाव की समस्या तो थी ही। उन्होंने तभी भांप लिया था कि मानव के विकास एवं उसके अस्तित्व के लिए प्रकृति के विभिन्न घटकों का परस्पर संतुलन आवश्यक है। प्रकृति के तीन प्रमुख घटक है– मानव, वनस्पति एवं मानवेत्तर जीव–जन्तु। इनमें मानव ही चिन्तनशील, बुद्धिमान एवं सामर्थ्यवान है। अन्य दोनों घटकों का अस्तित्व मानव की इच्छा पर निर्भर है। लेकिन मानव स्वयं भी तभी सुरक्षित है, जब तक वनस्पति एवं जीव–जन्तु सुरक्षित हो। इन्हीं तथ्यों को समझने वाले गुरु जाम्भोजी अपने अनुयायियों को पर्यावरण सुरक्षा का मूल मंत्र दिया। गुरु जाम्भोजी ने लोगों की भाषा में तथा उनकी बुद्धि के अनुरूप उपमानों का प्रयोग करते हुए समझाया, उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं को लोगों ने हृदयांगम कर लिया। पंथ के अनुयायियों हेतु अहिंसा तथा पर्यावरण संबन्धी नियम मात्र सैद्धान्तिक नहीं है, अपितु व्यावहारिक है। आज भी उनके आचरण में विद्यमान है। पर्यावरण संरक्षण एवं जीव दया के नियम की पालना में सैकड़ों विश्नोइयों ने प्राणों की आहुति दी है। विश्नोई पंथ ने पर्यावरण की सुरक्षा हेतु जाम्भोजी द्वारा प्रज्ज्वलित यज्ञ में अपने प्राणों रूपी समिधा देकर निरन्तर प्रकाशवान रखा है। इस यज्ञकी सबसे बड़ी आहुति विश्व प्रसिद्ध खेजड़ली बलिदान है, जो कि जाम्भाणी साहित्य में 'खेजड़ली के खडाणे'[6] के नाम से प्रसिद्ध है। वि. सं. 1787 की भादवा सुदी दशमी तक जोधपुर निकटवर्ती ग्राम खेजड़ली में वृक्षों की रक्षा करते हुए 363 विश्नोई स्त्री–पुरूषों ने अपने प्राण न्योछावर कर दिये। आज भी यह विश्व की एक मात्र वृक्षों के निमित्त होने वाली सबसे अधिक लोमहर्षक घटना है। विश्व पटल पर विश्नोई पंथ ने अपने पर्यावरण प्रेम एवं जीवरक्षा हेतु मिसाल कायम की है।

खेजड़ली बलिदान की नेत्री श्रीमती अमृता देवी का उद्घोष **'सिर साटे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण'** आज भी पर्यावरण प्रेमियों की प्रेरणा को द्विगुणित करता है। धन्य है, वह पंथ एवं पंथ के प्रवर्तक, जिनके अनुयायी कहते हैं– अगर हमारे शीश कटने पर भी वृक्ष की रक्षा हो जाय तो भी इस सौदे को सस्ता समझना चाहिए।

वर्तमान में 'ग्लोबल वार्मिंग' पर्यावरणीय असंतुलन तथा वन्य जीवों की घटती संख्या जैसी ज्वलन्त समस्याओं का निराकरण सम्पूर्ण विश्व के वैज्ञानिक एवं पर्यावरण प्रेमी भी आज वही बता रहे है, जो कि जाम्भोजी ने अपनी वाणी में पाँच शताब्दी पूर्व ही प्रतिपादित कर दिये थे।

गुरु जाम्भोजी ने लोगों को विभिन्न प्रकार से चेतावनी देकर, समझाकर जीव दया के महत्त्व से परिचित करवाया।

भाई नाऊं बळद पियारो,
तिंहकै गळै करद क्यों सा'रो ?
विणि चीन्ह खुदाई तरस विवरजत।[7]

अर्थात् बैल भाई से भी प्यारा है, क्योंकि वह कृषि कार्यों में सहायक है, जिससे हमारा भरण–पोषण होता है। अतः उसकी हत्या अनुचित है। जो लोग ईश्वर के स्वरूप को

नहीं जानते, वे दया से रहित हैं।

जो प्राणी मात्र के प्रति दया, रक्षा के दायित्व का निर्वाह करते हैं वे ही ईश्वर के सच्चे साधक हैं। सभी प्राणी एक ही ईश्वर की संतति हैं, अतः अन्य प्राणियों को कष्ट देना ईश्वर के प्रति धृष्टता है। सभी प्राणियों को इस पृथ्वी पर समान रूप से जीने का अधिकार है। सभी प्राणियों का संतुलन ही पृथ्वी के पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक है। गुरु जाम्भोजी ने 'जम्भवाणी' में वृक्षों का महत्त्व बताया है। गुरु जाम्भोजी ने कहा है – **'मोरै धरतीं ध्यान, बनस्पति बासो। ओजू मंडल छायों।''**[8]

अर्थात यह सम्पूर्ण पृथ्वी मेरे ध्यान में तथा मेरा निवास वनस्पति में है। वनस्पति को काटना, वनस्पति पर प्रहार करना अर्थात साक्षात् गुरु जाम्भोजी पर प्रहार करना है। विश्नोई पंथानुयायियों ने वनस्पति की रक्षा के नियम का अक्षरशः पालन किया है क्योंकि वनस्पति में ही गुरु जाम्भोजी का वास है। हमारी सभी मूलभूत आवश्यकताओं तथा भौतिक सुख–सुविधाओं की प्राप्ति का मूल स्त्रोत प्रकृति ही है। अतः सर्वत्र ईश्वर की विद्यमानता है, वैसे ही प्रकृति एवं पर्यावरण मनुष्य की आधारभूत आवश्यकता है। मनुष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण वर्तमान की महत्ती आवश्यकता है लेकिन विश्नोई समाज ने इस तथ्य को गुरु जाम्भोजी की कृपा से 5 सदी पूर्व ही जान लिया। आज विश्नोई पंथ का प्रत्येक अनुयायी पर्यावरण रक्षा को मानता ही नहीं अपितु अपने आचरण एवं व्यवहार में साक्षात् जीता भी है। बिना वनस्पति और पेड़–पौधों के मनुष्य जीवन की कल्पना दुष्कर है। विश्नोई समाज में पेड़ों की रक्षा व्यावहारिक जीवन का अनिवार्य अंग है। उनकी पर्यावरणीय अवधारणा न केवल मध्ययुग के अनुरूप थी अपितु कालजयी एवं शाश्वत है।

विश्नोई पंथ के अनुयायियों हेतु अहिंसा एवं वृक्ष रक्षा संबंधी नियम मात्र सैद्धान्तिक नहीं हैं अपितु पूर्णतः व्यावहारिक हैं। 29 नियमों में पानी, जलाने की लकड़ी (ईंधन) तथा दूध[9] को छानकर प्रयुक्त करने के नियम का उद्देश्य सूक्ष्म जीवों की रक्षा से ही है। आज भी विश्नोई लोग इनका कट्टरता से पालन करते हैं तथा जलाने हेतु सदैव सूखी व स्वच्छ लकड़ी ही प्रयुक्त करते हैं। थाट (भेड़–बकरी) अमर रखना[10] तथा बैल को बधिया (नपुंसक)[11] न करवाना आदि नियम भी जीव रक्षा एवं दया से ही प्रेरित हैं। माँस नहीं खाने[12] का नियम भी पर्यावरण संरक्षण तथा जैविकी चक्र की सुरक्षा हेतु सार्थक है। गुरु जाम्भोजी ने पर्यावरण संरक्षण को धर्म से जोड़कर और अधिक सशक्त एवं लोकग्राह्य बना दिया। विश्नोई पंथ के पर्यावरण संरक्षण के संबंध में एक विशेष तथा रोचक बात यह है कि वे स्वयं न तो जीवहत्या करते हैं तथा न ही पेड़ों को काटते हैं। यह तो शायद कई धर्मों के अनुयायी, जो अहिंसा का पालन करते हैं। वे भी मानते हैं, परन्तु विश्नोई समाज स्वयं के अतिरिक्त अन्य लोगों को भी हिंसा करने तथा वृक्षों को काटने से रोकता है। उन्हें ऐसा न करने हेतु समझाता, मनाता एवं रोकता भी है।

'बरजत मारै जीव, तहां मर जाइयै।'[13]

इसके उपरान्त अगर शत्रु नहीं माने तथा अत्यंत शक्तिशाली है तो विश्नोई समाज के लोग संघर्ष करते हुए प्राणों की बाजी लगा देते हैं। ऐसा उदाहरण अन्य समाज, धर्म तथा पंथ में नहीं मिलते हैं।

29 नियमों में एक नियम– नित्य प्रतिदिन हवन का है।[14] हवन (होम) की अग्नि वातावरण में व्याप्त प्रदूषण को दूर कर पर्यावरण को शुद्ध बनाती है। जाम्भोजी के समय से ही सामूहिक हवन की प्रथा विश्नोई समाज में चली आ रही है। आज विश्नोइयों के सभी प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आयोजित होने वाले मेलों पर तो कई मन (पुराना तौल 40 किलो) घी का हवन होता है। इस प्रकार का हवन पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने में सहायक होता आया है। विश्नोइयों के घरों में नित्य प्रातःकाल हवन होता है, जिससे घर का वातावरण शुद्ध रहता है।[15]

गुरु जाम्भोजी ने व्यक्ति को समाज तथा उसकी संस्कृति के विषय में सुप्त भावों को जगाकर संस्कारों की महत्ता से परिचित करवाया। लोक संस्कृति का परिष्कार कर उसका संवर्धन एवं परिवर्धन का महनीय कार्य किया। अकाल–अभावों में जी रहे लोक को प्रकृति, पर्यावरण व जैव विविधता के संरक्षण का दूरगामी पाठ पढ़ाकर मानव जाति की रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अपने अनुयायियों के रूप में पर्यावरण के पहरुओं को प्रेरित करके तप्त, त्रस्त धरा पर जीव एवं वनस्पति को संरक्षण प्रदान किया।

श्रीमती पुष्पा विश्नोई
प्रवक्ता (हिन्दी)
राजकीय कन्या महाविद्यालय
पीपाड.शहर (जोधपुर)

1. चिन्तन–सृजन वर्ष, अंक–1 – राजीव रंजन उपाध्याय, पृ. 82
2. जांभोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य भाग 1:– डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, पृ. 224
3. वही, पृ. 238
4. पंचशती स्मारिका – (सम्पा.) बनवारीलाल सहू, पृ. 19 (बिश्नोई धर्म एवं समाज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – बृजलाल बिश्नोई)
5. 29 नियम में नियम सं. – 19 एवं 20
6. साखी भावार्थ प्रकाश– स. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 310–314
7. वही, सबद 8
8. सबदवाणी गुटका :– स. कृष्णानंद आचार्य, पृ. 63, सबद सं. 29
9. 29 नियम में नियम सं. 10
10. 29 नियम में नियम सं. 23
11. 29 नियम में नियम सं. 24
12. 29 नियम में नियम सं. 28
13. वील्होजी की वाणी – (सम्पा.) कृष्णलाल विश्नोई, (बत्तीस आखड़ी), पृ. 231
14. 29 नियम में नियम सं. 9
15. पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ली बलिदान – डॉ. बनवारी लाल सहू, पृ. 39